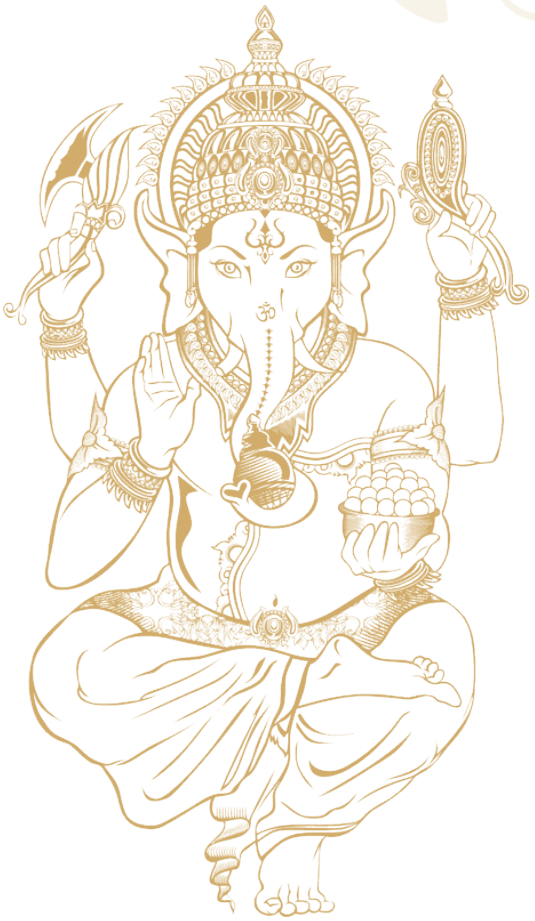

Mr.

27 Aug 2025

02:47 AM

Kathmandu

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119245801**

तिथि 27/08/2025 **समय** 02:47:00 **वार** बुधवार **स्थान** Kathmandu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:59
अक्षांश 27:05:00 उत्तर **रेखांश** 85:04:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 86:15:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:44 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	01:03:43 घं
वेलान्तर	00:01:32 घं
सूर्योदय	05:41:18 घं
सूर्यास्त	18:31:10 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	भाद्रपद
पक्ष	शुक्ल
तिथि	4
नक्षत्र	हस्त
योग	शुभ
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	महिष
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	ठ-ठुमकी
पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
होरा	बुध
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

चन्द्र 1वर्ष 4मा 1दि

चन्द्र

27/08/2025
28/12/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	27/08/2025
शुक्र	28/06/2026
सूर्य	28/12/2026

योगिनी

संकटा 1वर्ष 0मा 25दि

संकटा

27/08/2025
21/09/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	27/08/2025
सिद्धा	21/09/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			01:06:57	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	मंगल	---	0:00			
सूर्य			09:39:41	सिंह	मघा	3	केतु	शनि	मूलत्रिकोण	1.56	पुत्र	पितृ	वध
चंद्र			21:33:01	कन्या	हस्त	4	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि	1.47	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			18:23:01	कन्या	हस्त	3	चंद्र	बुध	शत्रु राशि	1.57	मातृ	भ्रातृ	जन्म
बुध			23:45:29	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	मंगल	शत्रु राशि	1.03	आत्मा	ज्ञाति	साधक
गुरु			22:43:00	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.24	अमात्य	धन	क्षेम
शुक्र			07:12:20	कर्क	पुष्य	2	शनि	बुध	शत्रु राशि	1.03	ज्ञाति	कलत्र	प्रत्यारि
शनि	व		06:09:03	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.08	कलत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु			24:07:23	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु			24:07:23	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

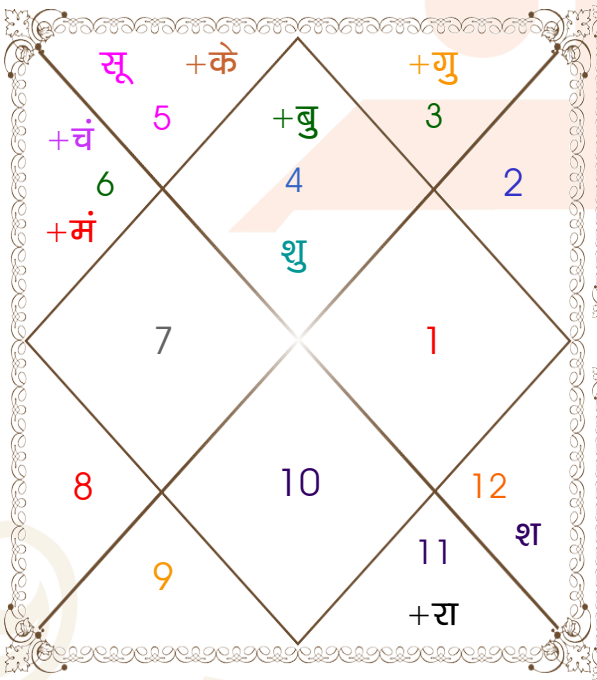

चन्द्र कुंडली

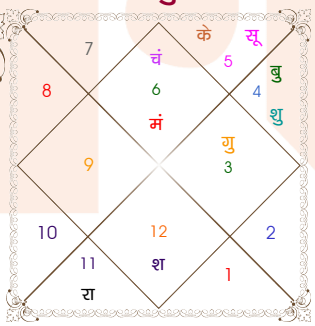

नवमांश कुंडली

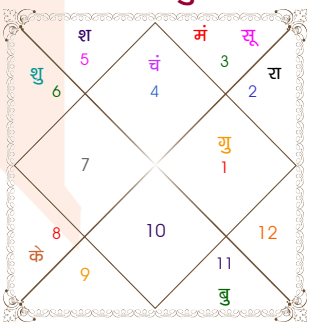

सर्वाष्टकवर्ग

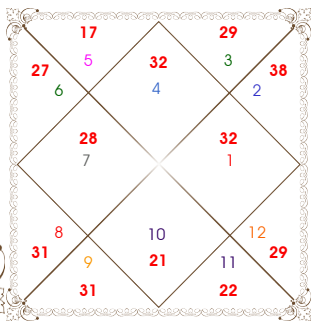

दशमांश कुंडली

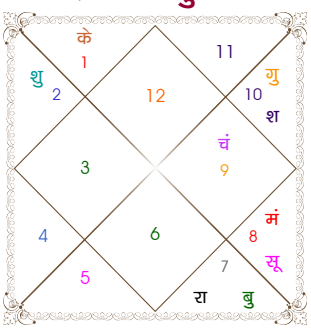

MANWENDRA SHARMA
Nepal Adhyatimk Jyotish Sansthan
9851036217, 9801136217

नक्षत्रफल

आप हस्त नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि महिष, वर्ण वैश्य, वर्ग श्वान, गण देव तथा नाडी आद्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम का प्रारम्भिक अक्षर "ठ" या "ठा" होगा।

आप प्रारम्भ से ही दानी प्रवृति की रहेंगी तथा समयानुसार यथाशक्ति गरीबों तथा जरूरतमंदो को दान देती रहेंगी। आप में मनुष्यता के सभी गुण विद्यमान रहेंगे। आप अपनी इस प्रवृति का आजीवन पालन करेंगी। पुत्रों से भी आप हमेशा युक्त रहेंगी। समाज में आप एक ख्यातिप्राप्त महिला होंगी तथा दूर दूर तक आपकी कीर्ति रहेगी। आप देवताओं के प्रति श्वद्धा एवं आस्था रखेंगी तथा इनकी सेवा करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी। सभी प्रकार की सम्पतियों तथा ऐश्वर्य को आप अपने बाहुबल से अर्जन करेंगी तथा जीवन में आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेर्वाचनकृत्प्रयत्नतः।
प्रसूति काले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसम्पत्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक दाता, मनस्वी, अतियशवाला, देवता और ब्राह्मणों का भक्त तथा सर्वप्रकार की सम्पति से सदैव युक्त रहता है।

आप समस्त भौतिक पदार्थो का उपभोग करने में हमेशा सफल रहेंगी तथा धर्म के पालन करने तथा दान पुण्यादि धार्मिक कार्यो को करने में भी हमेशा तत्पर रहेंगी। आप एक उच्च श्रेणी की विदुषी भी होंगी तथा समाज से पूर्ण मान तथा सम्मान प्राप्त करने में समर्थ रहेंगी। आप हमेशा परोपकार संबंधी कार्यो में विशेष रूचिशील रहेंगी तथा इन कार्यो को पूर्ण करने में अपना सम्पूर्ण योगदान प्रदान करेंगी। इसके अतिरिक्त विपुलधन की स्वामिनी बनकर समाज में ख्याति प्राप्त करेंगी।

हस्तर्क्षे यदि कामधर्मनिरतः प्राज्ञोपकर्ता धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात हस्त नक्षत्रोत्पन्न जातक सांसारिक भोग्य पदार्थ तथा पारलौकिक शुभ कर्मो को करने वाला तथा धनवान होता है।

आप हमेशा उत्साह से सम्पन्न रहेंगी तथा आपके अधिकांश सांसारिक कार्यकलाप इसी उत्साही प्रवृति से पूर्ण एवं सिद्ध होंगे। समाज में सभी वर्ग के लोगों से अच्छे संबंध रहेंगे तथा उनसे आप समय समय पर वांछित सहयोग प्राप्त करती रहंगी।

उत्साही धृष्टः पानपोळघृणी तस्करो हस्ते।

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक उत्साही, लज्जाहीन, मदिरा का सेवन करने वाला, घृणा न करने वाला एवं तस्कर होता है।

समय पड़ने पर आप मिथ्या भाषण से भी नहीं चूकेगी अर्थात् जहाँ आप असत्य बोलना अपने हित में समझेगी वहाँ इस प्रवृति का पालन करेंगी। आप अपने नज़दीकी बन्धुओं या सम्बन्धियों से भी युक्त रहेंगी। परन्तु इनकी ओर से आपको अल्प मात्रा में भी सहयोग की प्राप्त होगी।

असत्यवचनो धृष्टः सुरापी बन्धुवर्जितः।
हस्तो जातो नरश्चौरो जायते पारदारिकः।।
मानसागरी

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक झूठ बोलने वाला, निर्लज्ज, मद्यपान करने वाला बन्धुओं द्वारा वर्जित, चोर तथा अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

आप ताम्र पाद में पैदा हुई हैं। अतः आप आजीवन धनैश्वर्य से सर्वथा सम्पन्न रहेंगी एवं जीवन में धन का आपके पास अभाव नहीं रहेगा साथ ही सुखपूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगी। काव्य क्षेत्र में आप रूचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में सफलता भी अर्जित करेंगी। बन्धुवर्ग से आपके अत्यन्त ही मधुर संबंध रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हे प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। नवीन वस्त्रों को धारण करने में आप अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा समय समय पर इसका संग्रह भी करेंगी। शरीर से आप पूर्ण बलशाली तथा स्वस्थ रहेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा आपके प्रभुत्व को सभी लोग मन से स्वीकार करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यों को करने में भी आप उत्सुक रहेंगी। जीवन में आप प्रायः प्रसन्नता की ही अनुभूति करेंगी लेकिन स्वभाव में कृपणता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक विदुषी महिला होंगी तथा भाग्य से प्रबल रहेंगी।

कन्या राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके हाथों की लम्बाई अधिक होगी तथा शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। साथ ही मुख मंडल, आँखें, कान, दान्त आदि भी प्रिय एवं दर्शनीय रहेंगे। समाज में सभी वर्गों के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी। आप कई धार्मिक संस्थाओं की संचालिका या अध्यक्षा होंगी तथा इन संस्थाओं से आजीवन आपका संबंध रहेगा। धर्म के प्रति आप सहिष्णु होंगी तथा नियमपूर्वक धर्माचरण में हमेशा रत रहेंगी। आप की वाणी में मधुरता का सुन्दर समन्वय रहेगा। सत्य का पालन करना आपका प्रिय कर्तव्य होगा तथा शुद्धता के प्रति भी आप पूर्ण रूप से जागृत रहेंगी। धैर्य के गुण से भी आप युक्त रहेंगी तथा सभी कृत्यों को धैर्य से सम्पन्न करेंगी। आपकी वृति परोपकारी होगी तथा परोपकारार्थ किए गये कार्यो में सदा रूचिशील रहेंगी। जीवों तथा प्राणियों के प्रति आपके चित्त में दया तथा करूणा की भावना विद्यमान रहेगी। आप दण्ड देने की अपेक्षा क्षमा करने को अधिक उपयुक्त समझेंगी अतः क्षमाशील कहलाएंगी। सौभाग्य हमेशा आपका सहायक रहेगा तथा आपके

अधिकांश कार्य भाग्यबल से पूर्ण तथा सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त संतति संख्या में आपकी कन्याएं अधिक मात्रा में उत्पन्न होगी तथा पुत्रों की संख्या अल्प होगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णौ।
विद्धानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप लज्जामयी एवं आलस्य युक्त दृष्टि से गमन करने वाली होंगी। आपके स्कन्ध भाग तथा भुजाएं अल्प मात्रा में शिथिलता को प्राप्त होगी। आप जीवन में सम्पूर्ण सुखसंसाधनों से सम्पन्न होकर उनका उपभोग करेंगी। नाना प्रकार की कलाओं में आपकी रूचि रहेगी तथा इनमें आप दक्षता भी प्राप्त करेंगी। साथ ही विविध प्रकार के शास्त्रों के तत्वज्ञान को भी आप प्रयत्न पूर्वक परिश्रम से प्राप्त करेंगी। आप किसी तीसरे व्यक्ति के मकान एवं धन का उपयोग करने में भी सफलता प्राप्त करेंगी। आपके शरीर की लावण्यता दर्शनीय रहेगी तथा परदेश में निवास करने की इच्छा भी आपके हृदय में रहेगी।

व्रीळामंथरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

आप अपनी हास्य एवं विलासमयी मुद्राओं तथा क्रियाओं से अन्यजनों को अपनी ओर आकर्षित करने तथा उन्हे प्रसन्न करने में अत्यन्त ही निपुण होंगी। आपका स्वभाव छल कपट से विहीन सरल एवं सुशील रहेंगा। आप अपने कर्तव्य क्षेत्र में हमेशा ईमानदार रहेंगी। आप हमेशा अच्छे कार्यों को करने की इच्छुक रहेंगी दुष्कर्मो की आप प्रयत्नपूर्वक उपेक्षा करेंगी। साथ ही आप एक सौभाग्यशाली महिला भी होंगी। एवं विनयशीलता के गुण से भी सम्पन्न रहेंगी।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आप निर्मल तथा छल कपट विहीन बुद्धि से युक्त रहेंगी तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्यों को पूर्ण करेंगी। आप लेखन कार्य की ओर पूर्ण रूप से रूचिशील रहेंगी अतः काव्य लेखन के क्षेत्र में सफलता अर्जित कर सकेंगी। आपके चित्त में चंचलता का हमेशा अभाव रहेगा तथा शान्त भाव से अपने कार्यो को या अन्य कृतियों को पूर्ण करती रहेंगी। आप कभी कभी नेत्र कष्ट से दुःख प्राप्त करेंगी तथा गुरूजनों के हित के कार्य के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।

कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आपकी प्रवृति विलासी होगी तथा विलास संबंधी पदार्थो तथा सामग्री पर आप खूब व्यय करेंगी। भद्रजनों के प्रति आपके मन में पूर्ण आदर तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा ये भी आपसे सदा खुश रहेंगे। वैदिक धर्म के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्नपूर्वक इसका पालन करने में हमेशा रत रहेंगी। संगीत एवं नृत्य की भी आप अत्यन्त शौकीन रहेंगी।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप अपने जीवन काल में समस्त सांसारिक एवं भोग्य पदार्थों का उपभोग करेंगी परन्तु कामेच्छा की तीव्रता के कारण आप हमेशा व्याकुलता की अनुभूति करेगी। आपकी वाणी सुन्दर होगी तथा सबसे मधुर संबंध रहेंगे। इसके साथ ही नाना प्रकार की कलाओं तथा शास्त्रों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

देवगण में जन्म होने के कारण आप श्रेष्ठ एवं मधुर वाणी को बोलने वाली होंगी जिससे अन्य जन प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आपकी बुद्धि निर्मल तथा सरल होगी। अपनी बातों को आप स्पष्ट एवं सरलतापूर्वक अन्यों के समक्ष प्रस्तुत कर सकेंगी तथा अन्य जनों के विचारों को भी सुगमता से ग्रहण करेंगी। आपको थोडी मात्रा में भोजन करना रूचिकर लगेगा। गुणों के विषय में आपको विषद् ज्ञान रहेगा तथा दूसरे लोगों के गुणों को जानने में आप निपुण रहेंगी तथा स्वयं भी महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से सम्पन्न रहेंगी तथा धन सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगी।

आप की शारीरिक सुन्दरता देखने में सुन्दर एवं मनोहारी होगी। आपकी प्रवृति दान देने की रहेगी। आप एक श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त महिला होंगी तथा हमेशा सादगी को पसन्द करेंगी। बाहरी दिखावा तथा भौतिकता से आप दूर ही रहेंगी तथा समाज में आप एक महान विदुषी के रूप में पूज्य एवं आदरणीय रहेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में पैदा होने के कारण आप लड़ाई झगड़े तथा विवाद संबंधी क्षेत्र में अधिकांश विजय ही प्राप्त करेंगी। आप स्वयं भी साहस तथा वीरता के गुणों से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। आपकी प्रकृति भी वायुप्रधान रहेंगी तथा धर्म के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी परन्तु बुद्धि आपकी मध्यम रहेंगी।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरें के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपको वे सर्वदा विशेष स्नेह प्रदान करेंगे। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपको उनसे आर्थिक सहयोग भी प्रायः मिलता रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प तनाव दृष्टिगोचर होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए ही रहेगा कुछ समय उपरान्त स्वतः सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही सुख दुःख में आप उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई

बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, श्रवण नक्षत्र, शुभ्योग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाला होगा। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15 तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग तथा कौलवकरण में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभकार्यो को सम्पन्न न करें अन्यथा सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर एवं वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यो में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक कष्ट, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान आदि उत्पन्न हो रहे हों या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में सिद्धि नहीं मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव श्री गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा गणेश चतुर्थी एवं बुधवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरा वस्त्र, मूंग की दाल आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित होगी।

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।